कहानीः यूया विस्लैंडर चित्रः स्वेन नॉर्दक्विस्ट

कजरी गाय फिसलपट्टी पर

हिन्दी अनुवाद
अरुंधती देवस्थले

कजरी गाय
फिसलपट्टी पर

कजरी गाय फिसलपट्टी पर

कहानीः यूया विस्लैंडर
चित्रः स्वेन नॉर्दक्विस्ट
अनुवादः अरुंधती देवस्थले

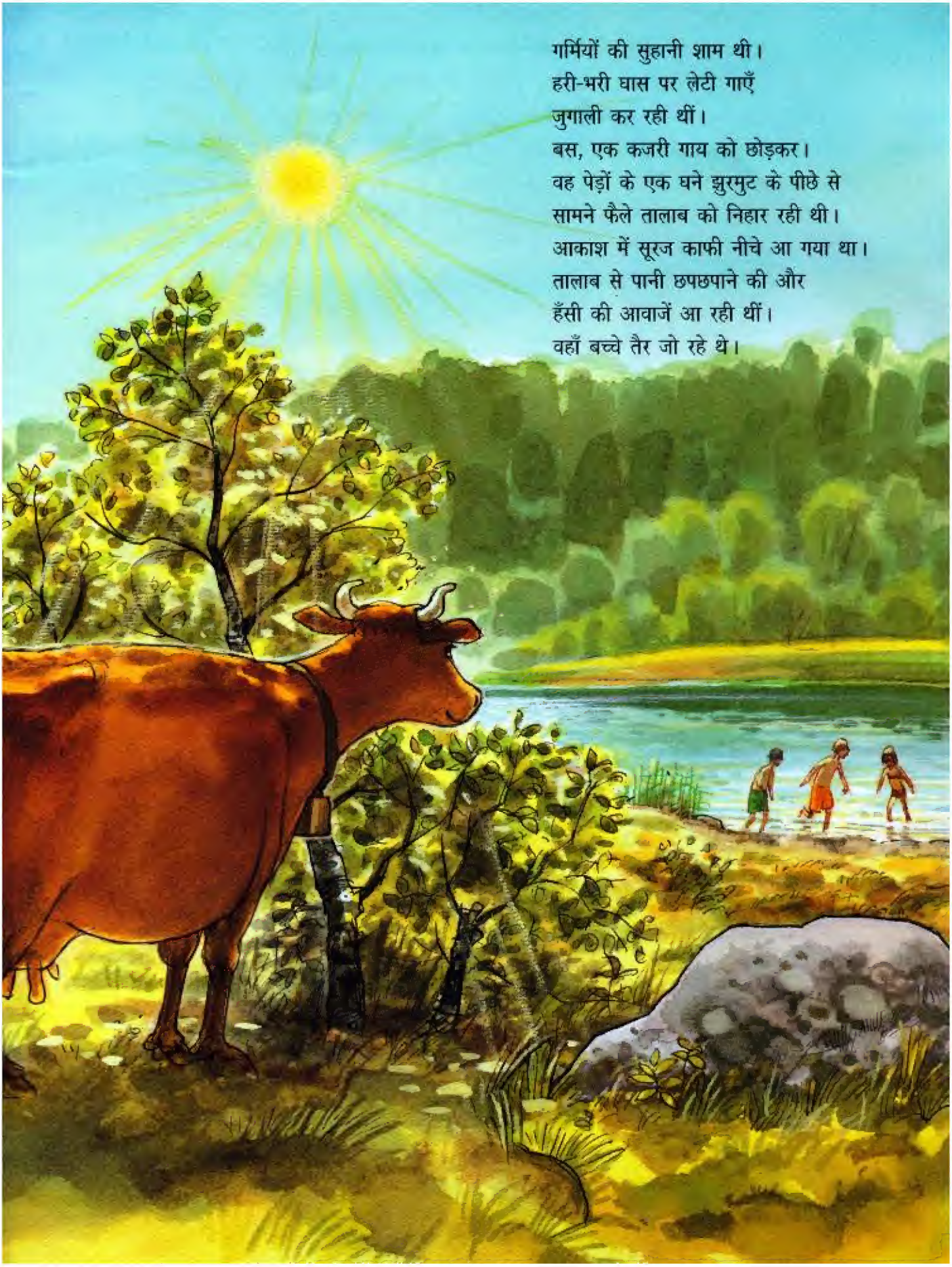

गर्मियों की सुहानी शाम थी।
हरी-भरी घास पर लेटी गाएँ
जुगाली कर रही थीं।
बस, एक कजरी गाय को छोड़कर।
वह पेड़ों के एक घने झुरमुट के पीछे से
सामने फैले तालाब को निहार रही थी।
आकाश में सूरज काफी नीचे आ गया था।
तालाब से पानी छपछपाने की और
हँसी की आवाजें आ रही थीं।
वहाँ बच्चे तैर जो रहे थे।

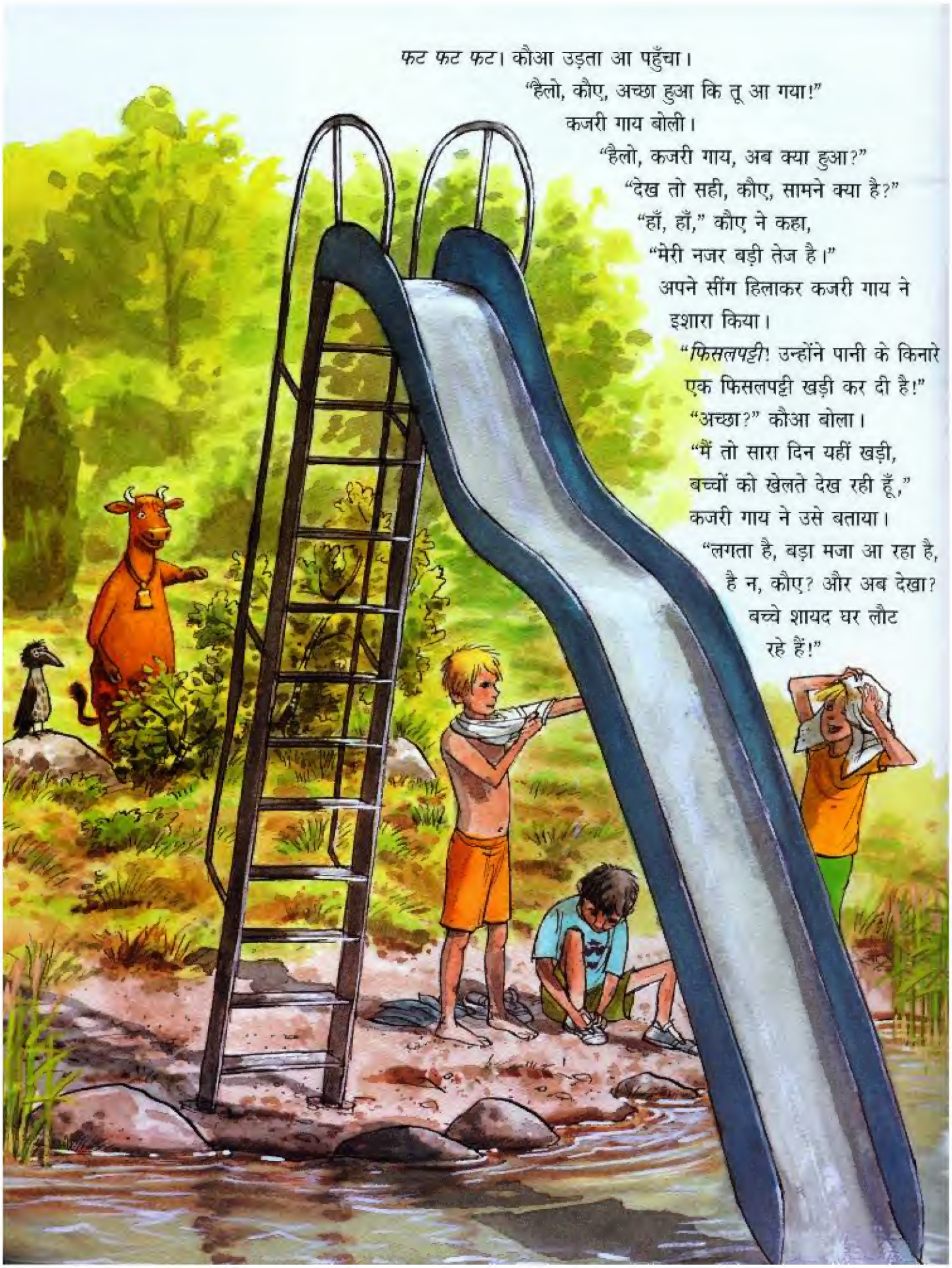

फट फट फट। कौआ उड़ता आ पहुँचा।

"हैलो, कौए, अच्छा हुआ कि तू आ गया!"
कजरी गाय बोली।

"हैलो, कजरी गाय, अब क्या हुआ?"

"देख तो सही, कौए, सामने क्या है?"

"हाँ, हाँ," कौए ने कहा,
"मेरी नजर बड़ी तेज है।"

अपने सींग हिलाकर कजरी गाय ने
इशारा किया।

"*फिसलपट्टी*! उन्होंने पानी के किनारे
एक फिसलपट्टी खड़ी कर दी है!"

"अच्छा?" कौआ बोला।

"मैं तो सारा दिन यहीं खड़ी,
बच्चों को खेलते देख रही हूँ,"
कजरी गाय ने उसे बताया।

"लगता है, बड़ा मजा आ रहा है,
है न, कौए? और अब देखा?
बच्चे शायद घर लौट
रहे हैं!"

कजरी गाय के लिए अब सीधा खड़े रहना मुश्किल था। वह ऊपर-नीचे कूदने लगी।
"कौए... अब *हमारी* बारी है!"
"नहीं!" कौए ने कहा।
"नहीं? क्या मतलब है तेरा?" कजरी गाय ने पूछा।
"कजरी गाय, तुम एक गाय हो।"
"पर यह फिसलपट्टी उन्होंने हमारे मैदान में लगाई है, इतना तो तुझे मानना ही होगा, कौए," कजरी गाय ने जोर देकर कहा।

"काँ! यह *बच्चों* के लिए है, कजरी गाय। बच्चे अकसर यहाँ तैरने आते हैं।
बच्चों को इस पर फिसलने में बड़ा मजा आता है। तभी तो यह यहाँ लगाई गई है।
इसलिए नहीं कि यह *हरा-भरा मैदान* है। कुछ आया तुम्हारी *समझ में?"*
"चलो, वहाँ नीचे चलें," कजरी गाय ने कहा।
फिसलपट्टी की ओर वह मन बनाकर दौड़ निकली।
उसके गले की घंटी आगे-पीछे झूल रही थी, टिंग-टिंग, टिंग-टिंग। पीछे से कौआ उड़ता आया।
"वहाँ जाओ, ठीक है। पर फिसलपट्टी पर चढ़कर फिसलने की कोशिश न करना।
गाय के लिए वह काफी *तंग* है। *गाय का भार* नहीं संभाल पाएगी।
ऊपर जाने की सीढ़ियाँ तो हैं, पर तुम उन पर चढ़ *नहीं* पाओगी।"

कजरी गाय फिसलपट्टी के पास जाकर रुकी। उसने ऊपर देखा।
"उफ्फ, मुझे पता नहीं था कि यह इतनी ऊँची है... कौए, सुन..."
वह मिनट भर सोचती रही।
"अब यह न कहना कि मैं *धक्का* दूँ!" कौए ने कहा। "मैं धक्का *नहीं* दूँगा!
यह *असंभव* है। कौआ गाय को धक्का नहीं दे सकता। मुझमें इतनी *ताकत* नहीं है।"
कजरी गाय ने उस पर दया भरी नजर डाली।
"नहीं होगा ना तुझसे? बेचारा!"

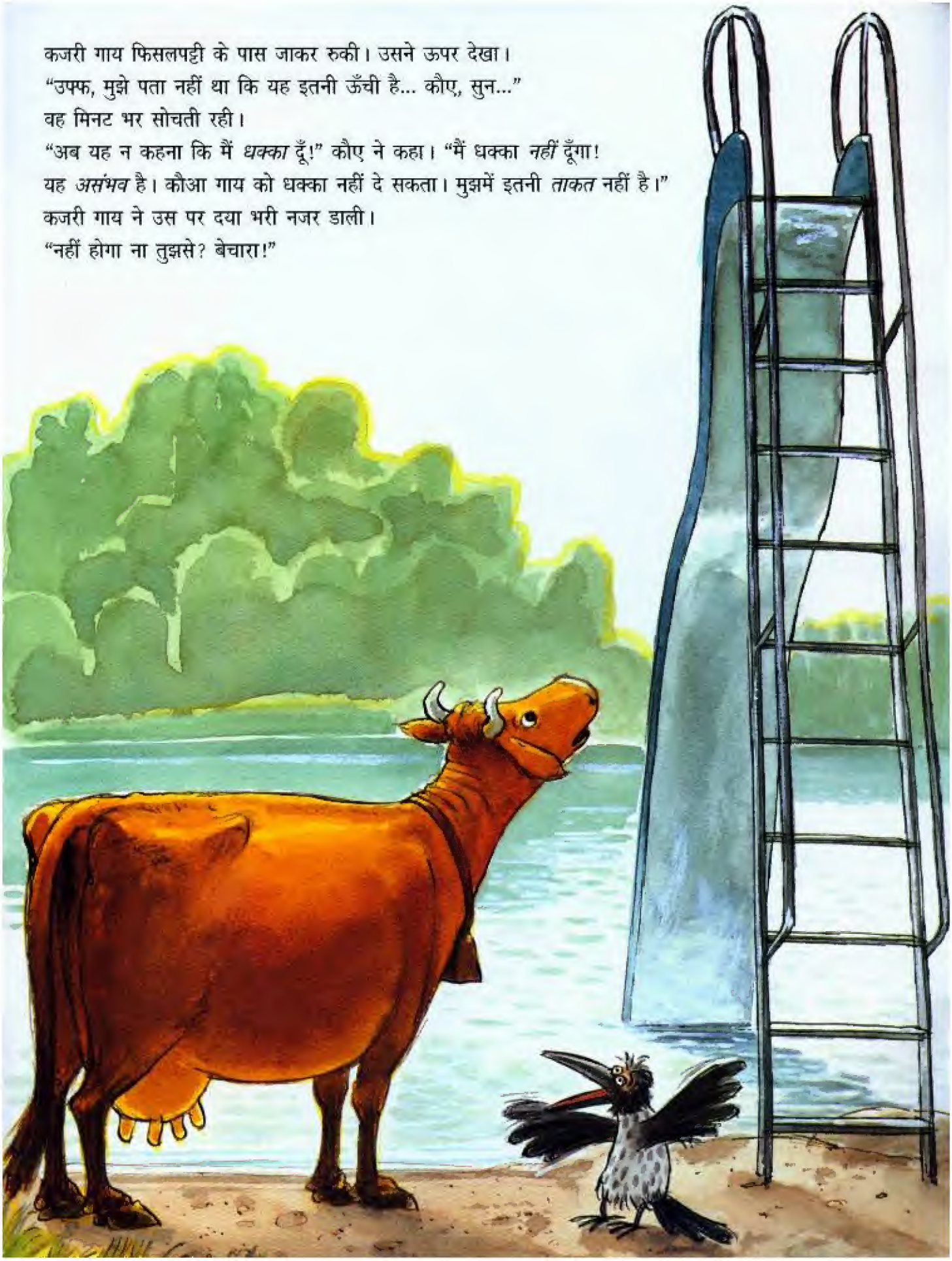

"कौन *कहता* है मुझसे नहीं होगा!" कौए ने पूछा।
"ताकतवान अगर मैं नहीं तो कौन है!"
एकदम जोर से और बहुत तेजी के साथ,
उसने कजरी गाय को सीढ़ियों से ऊपर धकेला।
खड़खड़ाहट का शोर और हाँफने की
आवाजें सुनाई दीं।

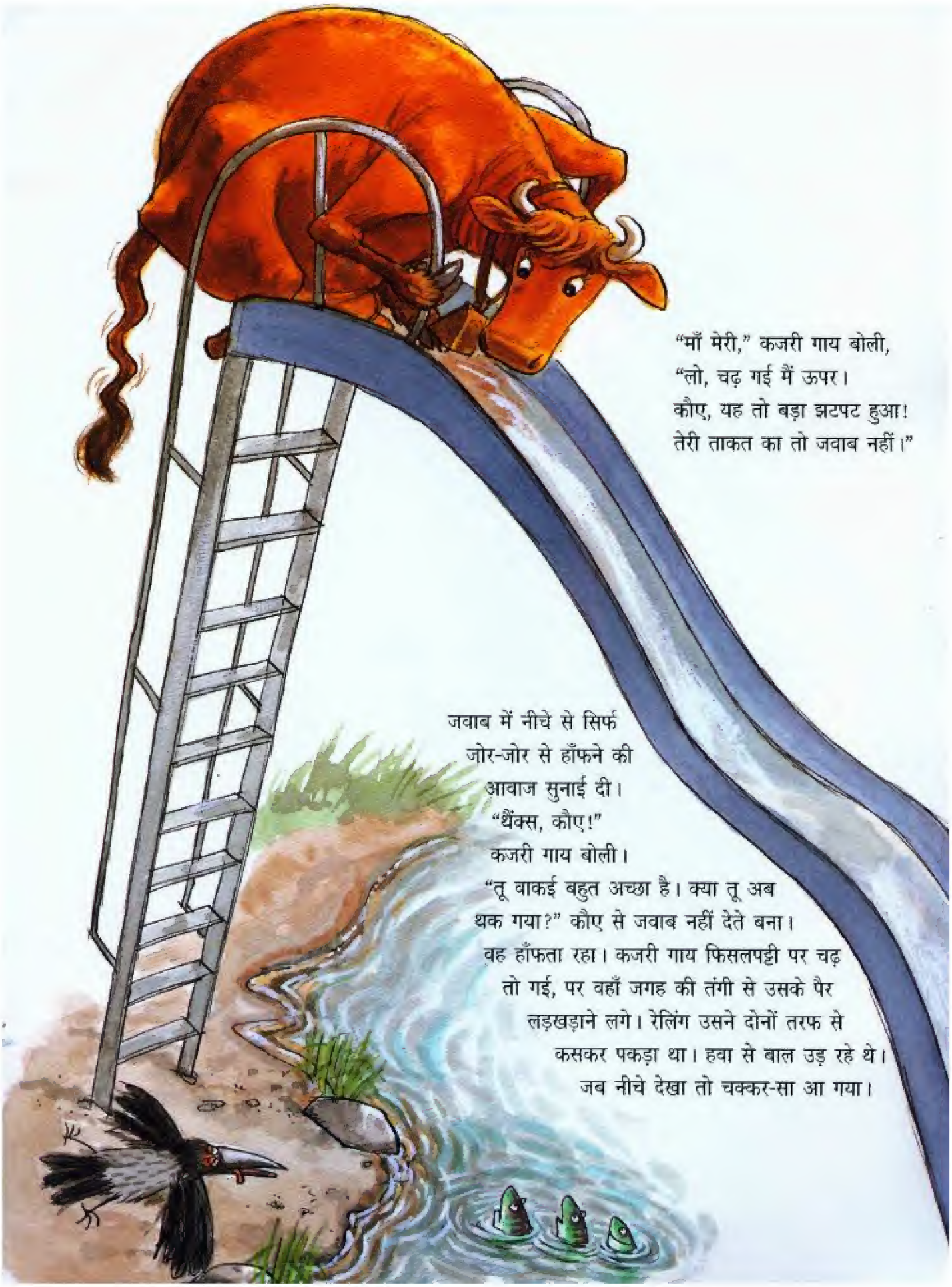

"माँ मेरी," कजरी गाय बोली,
"लो, चढ़ गई मैं ऊपर।
कौए, यह तो बड़ा झटपट हुआ!
तेरी ताकत का तो जवाब नहीं।"

जवाब में नीचे से सिर्फ
जोर-जोर से हाँफने की
आवाज सुनाई दी।
"थैंक्स, कौए!"
कजरी गाय बोली।
"तू वाकई बहुत अच्छा है। क्या तू अब
थक गया?" कौए से जवाब नहीं देते बना।
वह हाँफता रहा। कजरी गाय फिसलपट्टी पर चढ़
तो गई, पर वहाँ जगह की तंगी से उसके पैर
लड़खड़ाने लगे। रेलिंग उसने दोनों तरफ से
कसकर पकड़ा था। हवा से बाल उड़ रहे थे।
जब नीचे देखा तो चक्कर-सा आ गया।

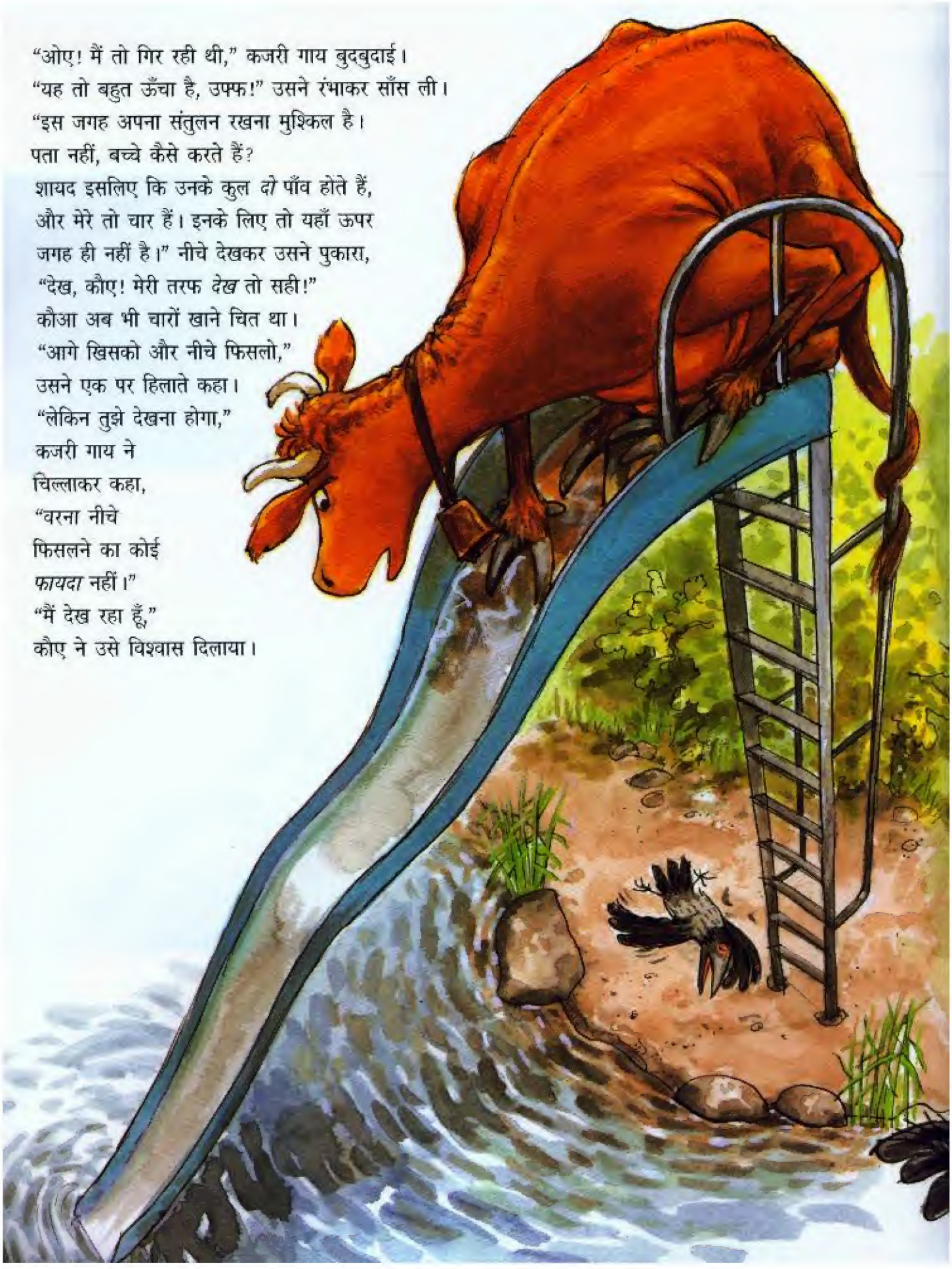

"ओए! मैं तो गिर रही थी," कजरी गाय बुदबुदाई।
"यह तो बहुत ऊँचा है, उफ्फ!" उसने रंभाकर साँस ली।
"इस जगह अपना संतुलन रखना मुश्किल है।
पता नहीं, बच्चे कैसे करते हैं?
शायद इसलिए कि उनके कुल *दो* पाँव होते हैं,
और मेरे तो चार हैं। इनके लिए तो यहाँ ऊपर
जगह ही नहीं है।" नीचे देखकर उसने पुकारा,
"देख, कौए! मेरी तरफ *देख* तो सही!"
कौआ अब भी चारों खाने चित था।
"आगे खिसको और नीचे फिसलो,"
उसने एक पर हिलाते कहा।
"लेकिन तुझे देखना होगा,"
कजरी गाय ने
चिल्लाकर कहा,
"वरना नीचे
फिसलने का कोई
फायदा नहीं।"
"मैं देख रहा हूँ,"
कौए ने उसे विश्वास दिलाया।

कजरी गाय फिसलपट्टी पर आगे नीचे की ओर झुकी।
"यह तो बड़ी तंग है। क्या मेरे फिसलने के लिए
सचमुच जगह है?"
"बस फिसलो *नीचे*," कौए ने उसे कहा।
"और बीच का हिस्सा थोड़ा उठा हुआ
भी तो है," कजरी गाय आगे बोली।
"उसके बारे में मैंने नहीं सोचा था..."
"फिसलो *नीच्चे*! कोई आ सकता है।"
"बहुत अच्छा! इसका मतलब यही हुआ कि ज्यादा
लोग देखेंगे," कजरी गाय ने जवाब दिया।
"*काँ!* मुझे चिंता उसी की है।"

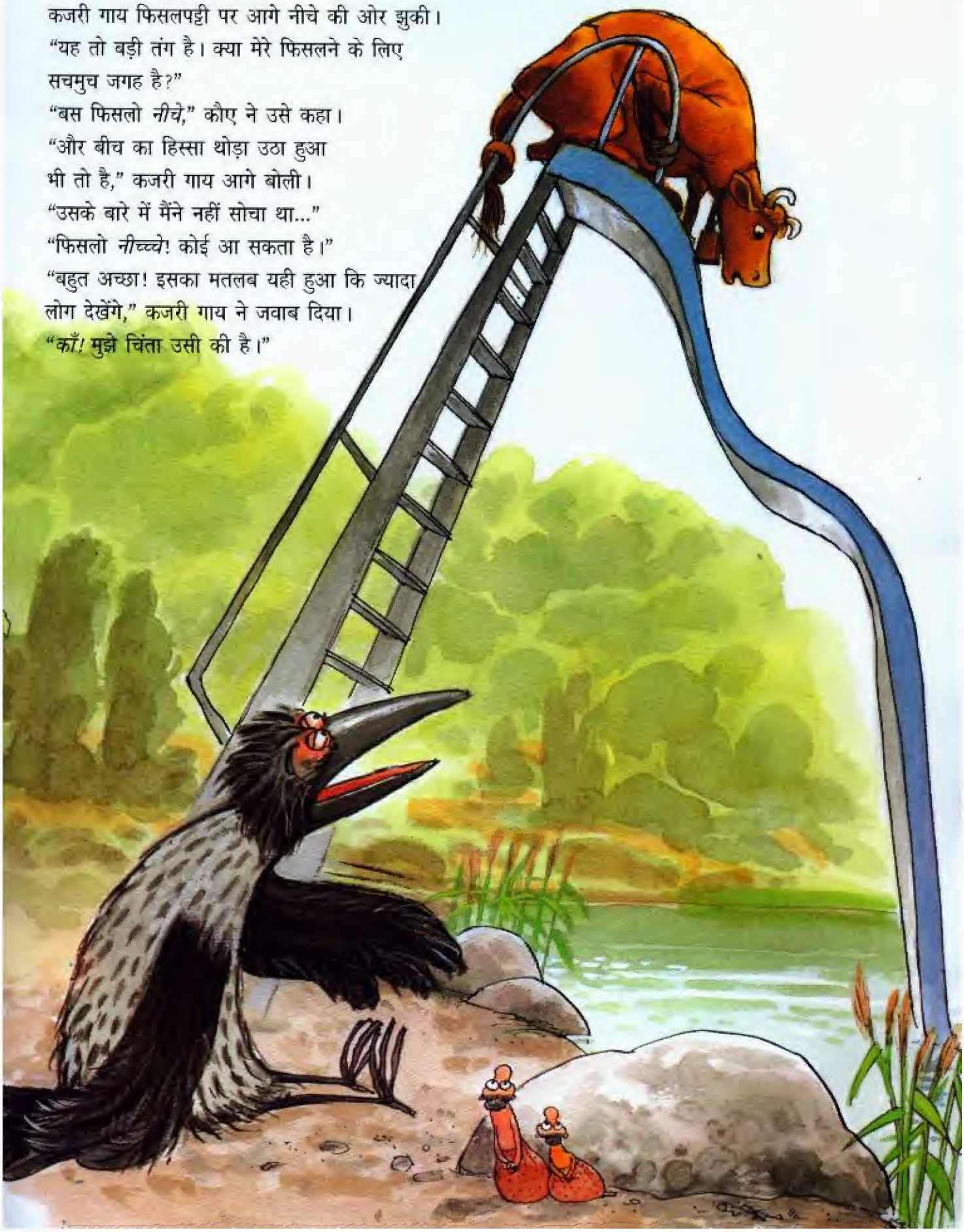

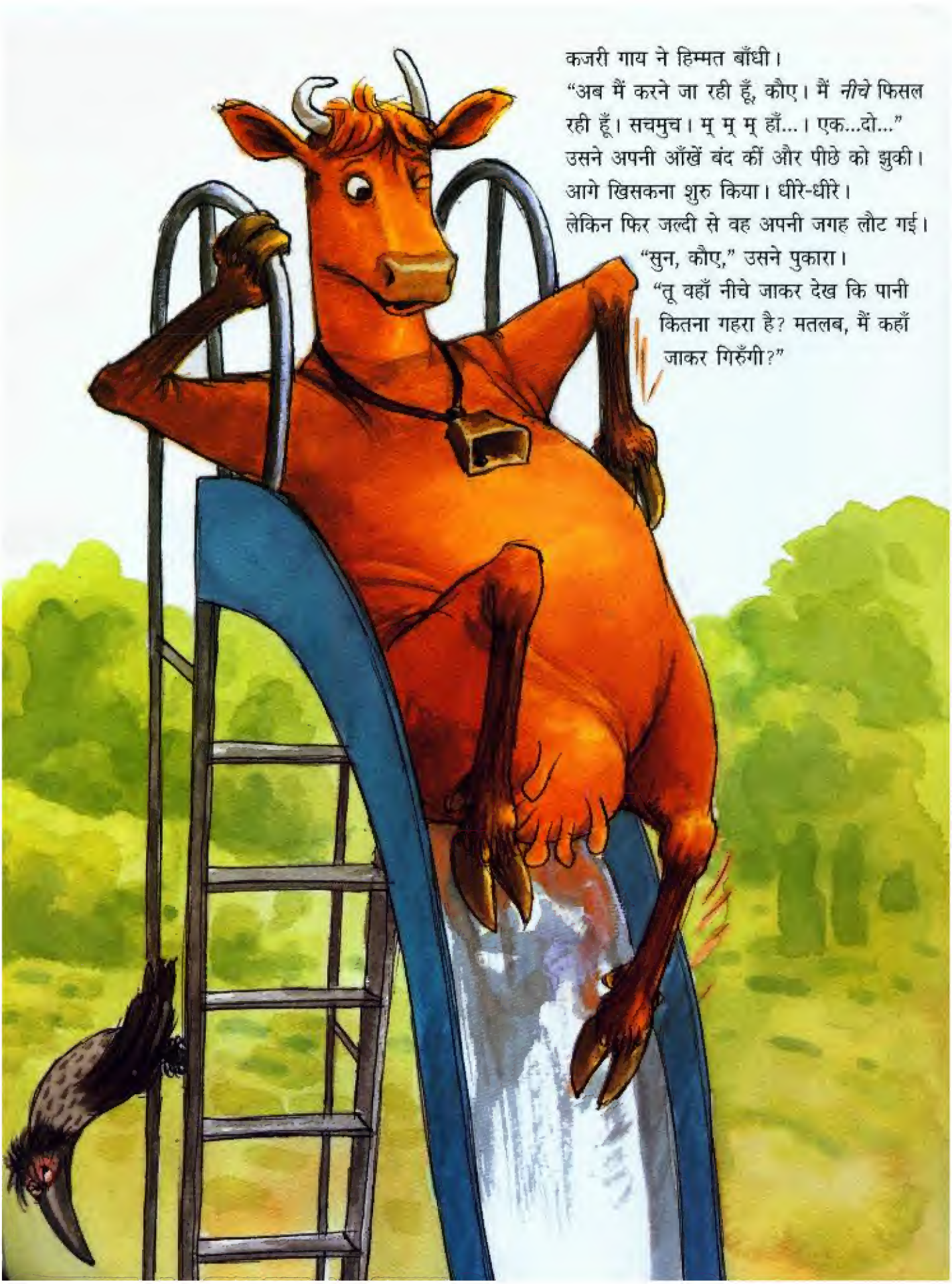

कजरी गाय ने हिम्मत बाँधी।
"अब मैं करने जा रही हूँ, कौए। मैं *नीचे* फिसल रही हूँ। सचमुच। म् म् म् हाँ...। एक...दो..."
उसने अपनी आँखें बंद कीं और पीछे को झुकी।
आगे खिसकना शुरु किया। धीरे-धीरे।
लेकिन फिर जल्दी से वह अपनी जगह लौट गई।
"सुन, कौए," उसने पुकारा।
"तू वहाँ नीचे जाकर देख कि पानी कितना गहरा है? मतलब, मैं कहाँ जाकर गिरुँगी?"

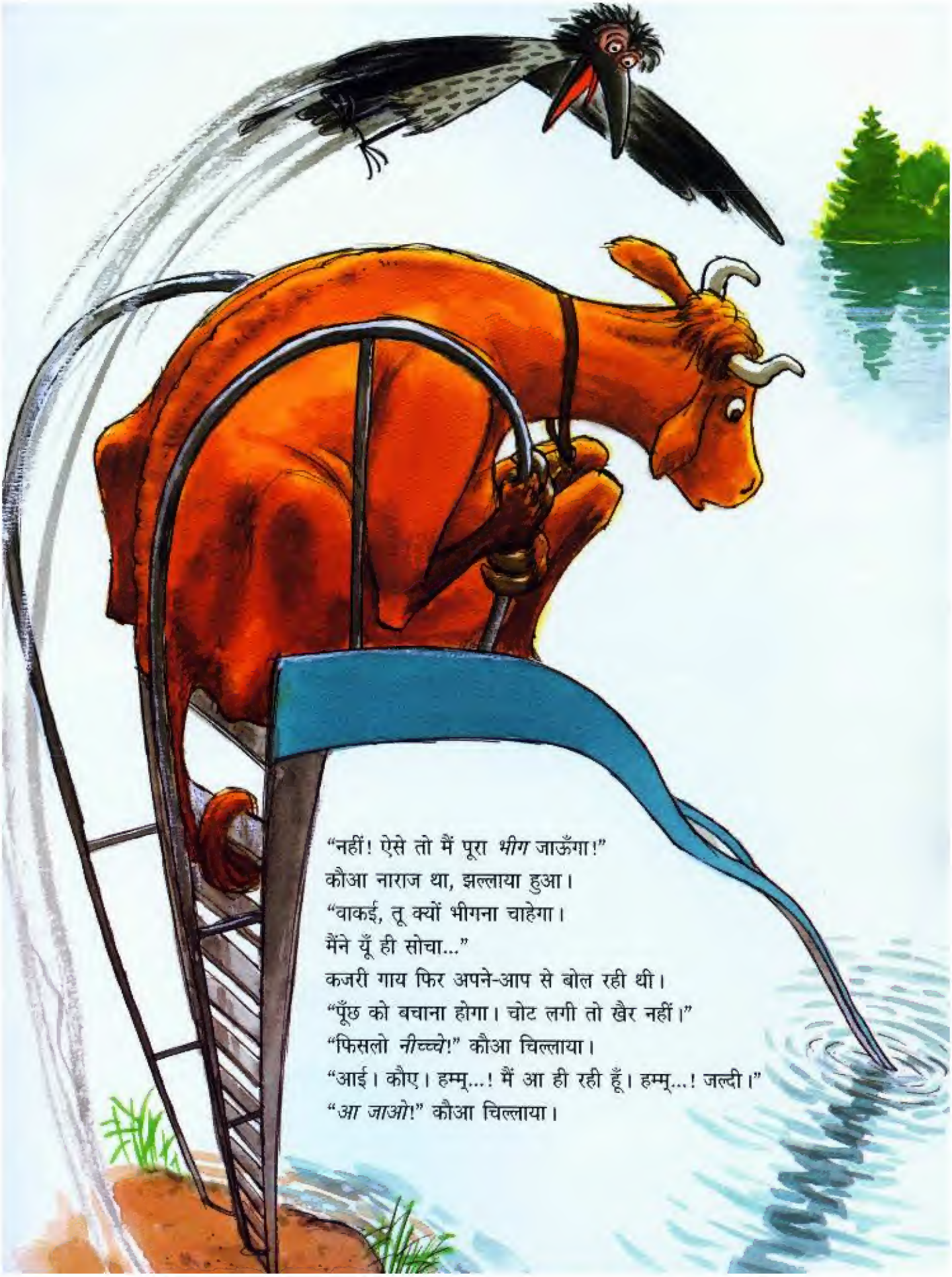

"नहीं! ऐसे तो मैं पूरा *भीग* जाऊँगा!"
कौआ नाराज था, झल्लाया हुआ।
"वाकई, तू क्यों भीगना चाहेगा।
मैंने यूँ ही सोचा..."
कजरी गाय फिर अपने-आप से बोल रही थी।
"पूँछ को बचाना होगा। चोट लगी तो खैर नहीं।"
"फिसलो *नीच्च्चे!*" कौआ चिल्लाया।
"आई। कौए। हम्म्...! मैं आ ही रही हूँ। हम्म्...! जल्दी।"
"*आ जाओ!*" कौआ चिल्लाया।

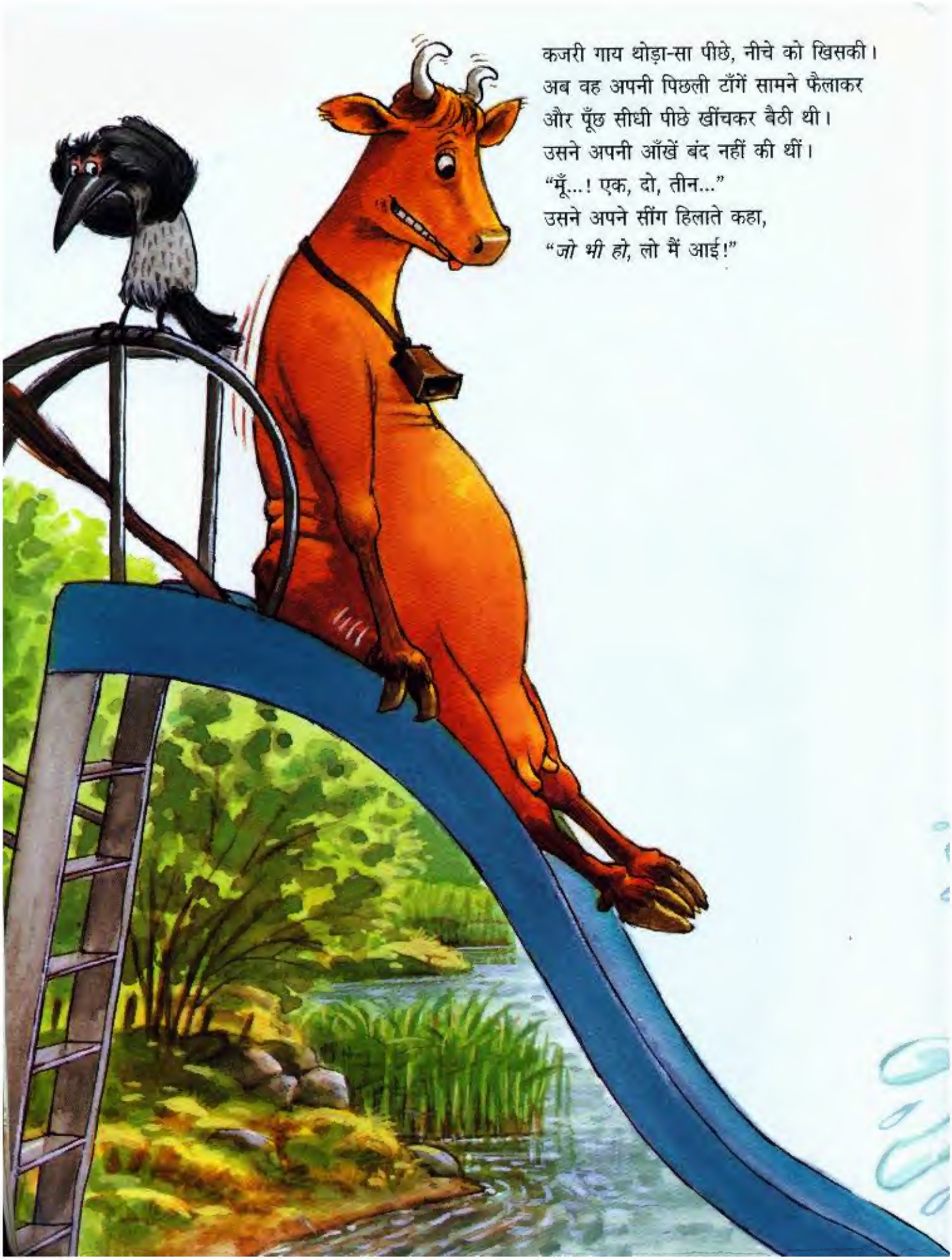

कजरी गाय थोड़ा-सा पीछे, नीचे को खिसकी।
अब वह अपनी पिछली टाँगें सामने फैलाकर
और पूँछ सीधी पीछे खींचकर बैठी थी।
उसने अपनी आँखें बंद नहीं की थीं।
"मूँ...! एक, दो, तीन..."
उसने अपने सींग हिलाते कहा,
"*जो भी हो*, लो मैं आई!"

पूरे तालाब पर धड़ाम की आवाज फैली और साथ जोरदार खड़खड़ाहट भी,
जैसे कोई भारी चीज पानी में गिरी हो।
ढेर सारा पानी उड़ाते, कजरी गाय तालाब में जा गिरी थी।
वह इतना हँस रही थी कि साँस लेना मुश्किल हो रहा था।

जब मुड़कर फिसलपट्टी को देखा तो घबराकर बोली,
"*यह क्या?* हे भगवान! कौए, देख क्या हुआ?"
कौआ अपने पंख कमर पर रख खड़ा हुआ।
"अरे! वाकई। जरा देखो तो क्या हुआ," उसने हामी भरी।
कजरी गाय पानी में उठकर खड़ी हो गई।
"फिसलपट्टी बिल्कुल सीधी हो गई," उसने गौर से देखते कहा।
"*काँ*! मैं जानता था ऐसा ही कुछ होगा," कौआ भुनभुनाया।
"कौए, यह तो सीधी सपाट हो गई।"
"मैंने *कहा* था। *कहा* था, मैंने तुमसे। मैं शुरु से कह रहा था... पर तुम सुनने को कब तैयार थी?"
कजरी गाय बहुत उदास हो गई थी।
"पर यह फिसलपट्टी तो सीधी हो गई है! और *बच्चे*, कौए, बच्चों का क्या होगा!
वे तो इस सपाट फिसलपट्टी पर खेल ही नहीं पाएँगे," उसने कहा।
कानों से पानी टप-टप गिर रहा था, सींग झुके हुए लग रहे थे।

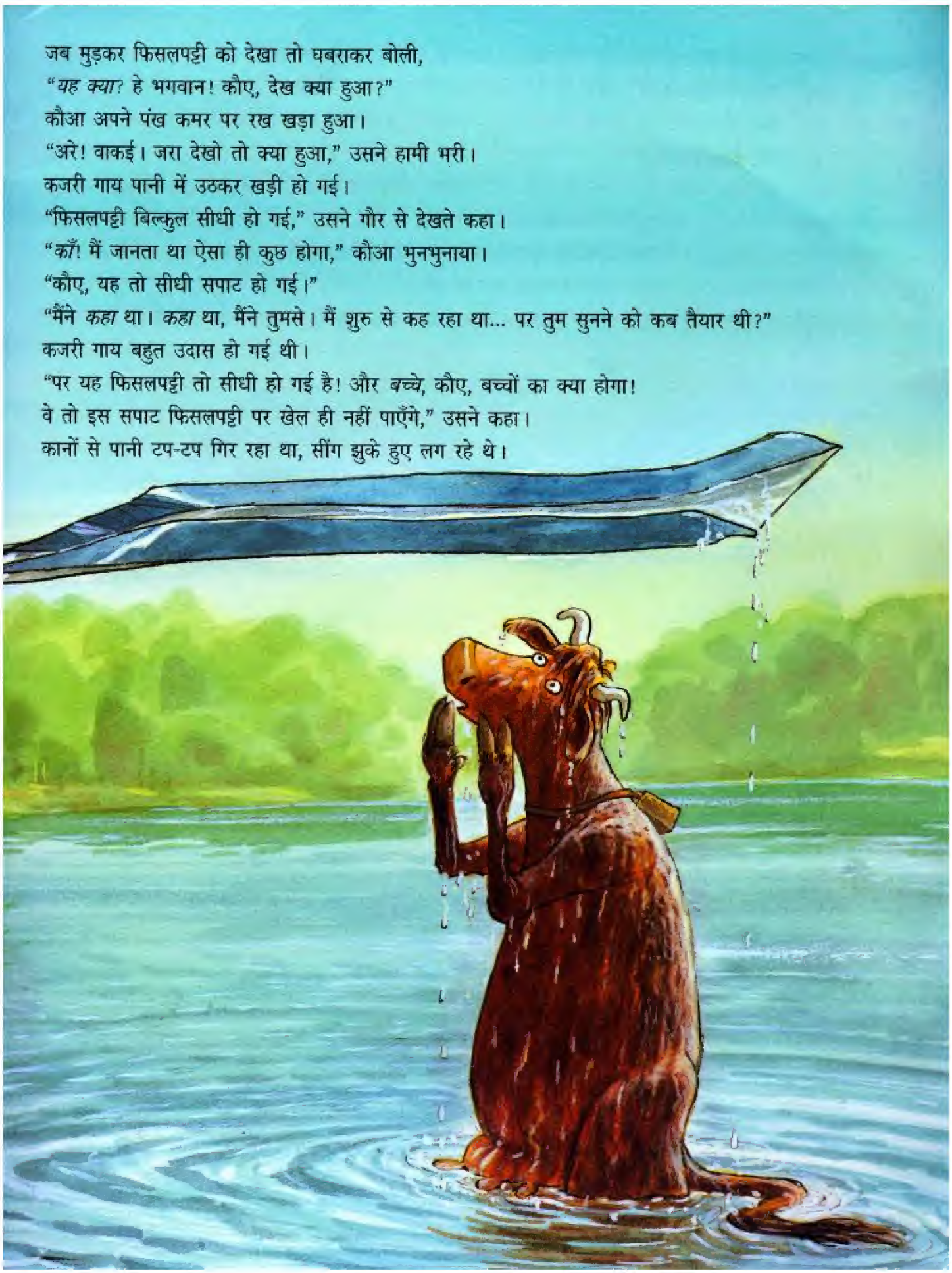

"तुम्हें इसके बारे में *पहले ही* सोचना चाहिए था," कौए ने उसे डाँटा।

"मैंने अपने आप को तुमसे यह कहते सुना था।"

"पर, कौए, तुझे कुछ तो करना ही होगा," कजरी गाय ने जिद की।

कौए ने पीठ फेर ली।

"असंभव। अब कोई कुछ कर नहीं सकता। बच्चे इस फिसलपट्टी पर कभी फिसल नहीं पाएँगे। हो सकता है कि वे इसे उठाकर कहीं फेंक दें।"

गाय ने उदासी से रंभाकर कहा, "यह तो गजब हो गया। मैंने कभी सोचा ही नहीं था कि ऐसा कुछ हो जाएगा।"

घास पर बैठी कजरी गाय पछतावे में सिर हिला रही थी।

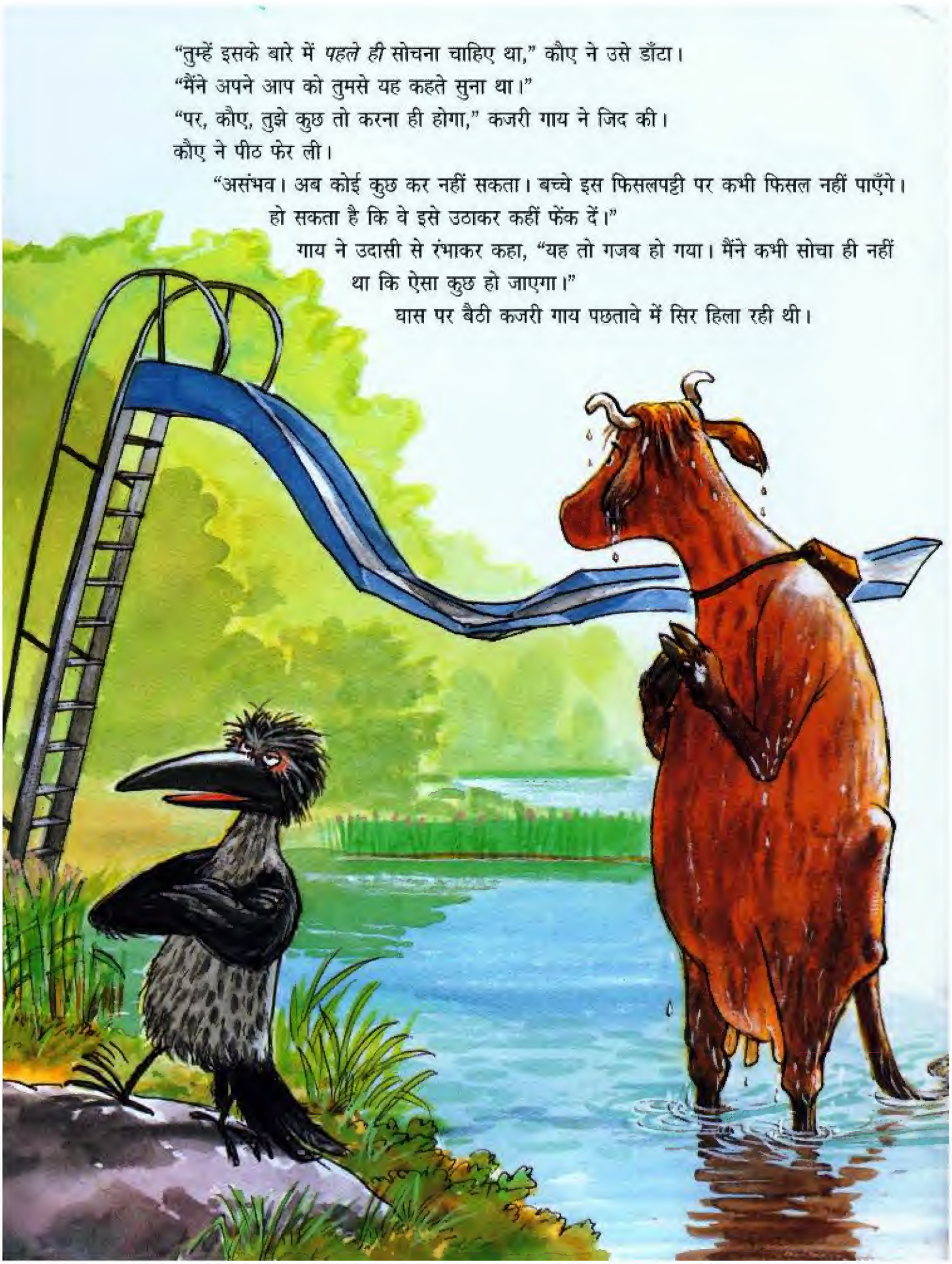

"ना जी ना! इसे ठीक करने का कोई आसान तरीका नहीं है," कौए ने राय दी।
वह उसके सामने चहलकदमी करता सोचने लगा। हवा में कुछ इशारे करता,
पंख फड़फड़ाता। उसकी थकान जाने कहाँ भाग गई थी।
"तो चलो, मुश्किल तरीका ही सोचें," कजरी गाय ने धीमे से कहा।
"तुझे मुश्किल तरीके ढूँढ निकालना खूब आता है..."
कौआ सीधा खड़ा हो गया। उसने अपना गला साफ किया।
"ठीक है, जरा सोचने दो। तब तक तुम चुपचाप बैठी रहो।"
गाय ने रंभाकर हामी भरी।

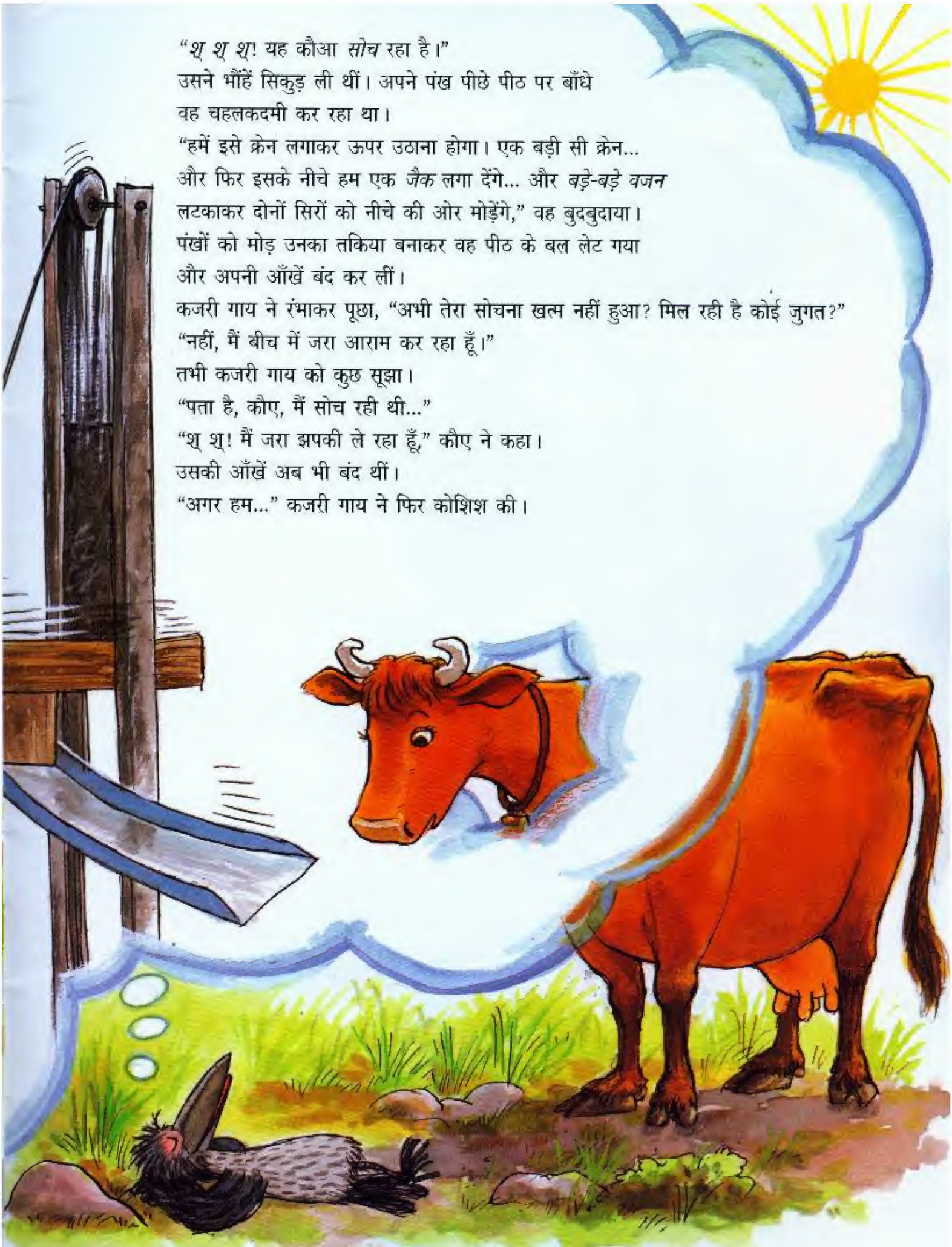

"*श् श् श्*! यह कौआ *सोच* रहा है।"
उसने भौंहें सिकुड़ ली थीं। अपने पंख पीछे पीठ पर बाँधे
वह चहलकदमी कर रहा था।
"हमें इसे क्रेन लगाकर ऊपर उठाना होगा। एक बड़ी सी क्रेन...
और फिर इसके नीचे हम एक *जैक* लगा देंगे... और *बड़े-बड़े वजन*
लटकाकर दोनों सिरों को नीचे की ओर मोड़ेंगे," वह बुदबुदाया।
पंखों को मोड़ उनका तकिया बनाकर वह पीठ के बल लेट गया
और अपनी आँखें बंद कर लीं।
कजरी गाय ने रंभाकर पूछा, "अभी तेरा सोचना खत्म नहीं हुआ? मिल रही है कोई जुगत?"
"नहीं, मैं बीच में जरा आराम कर रहा हूँ।"
तभी कजरी गाय को कुछ सूझा।
"पता है, कौए, मैं सोच रही थी..."
"श् श्! मैं जरा झपकी ले रहा हूँ," कौए ने कहा।
उसकी आँखें अब भी बंद थीं।
"अगर हम..." कजरी गाय ने फिर कोशिश की।

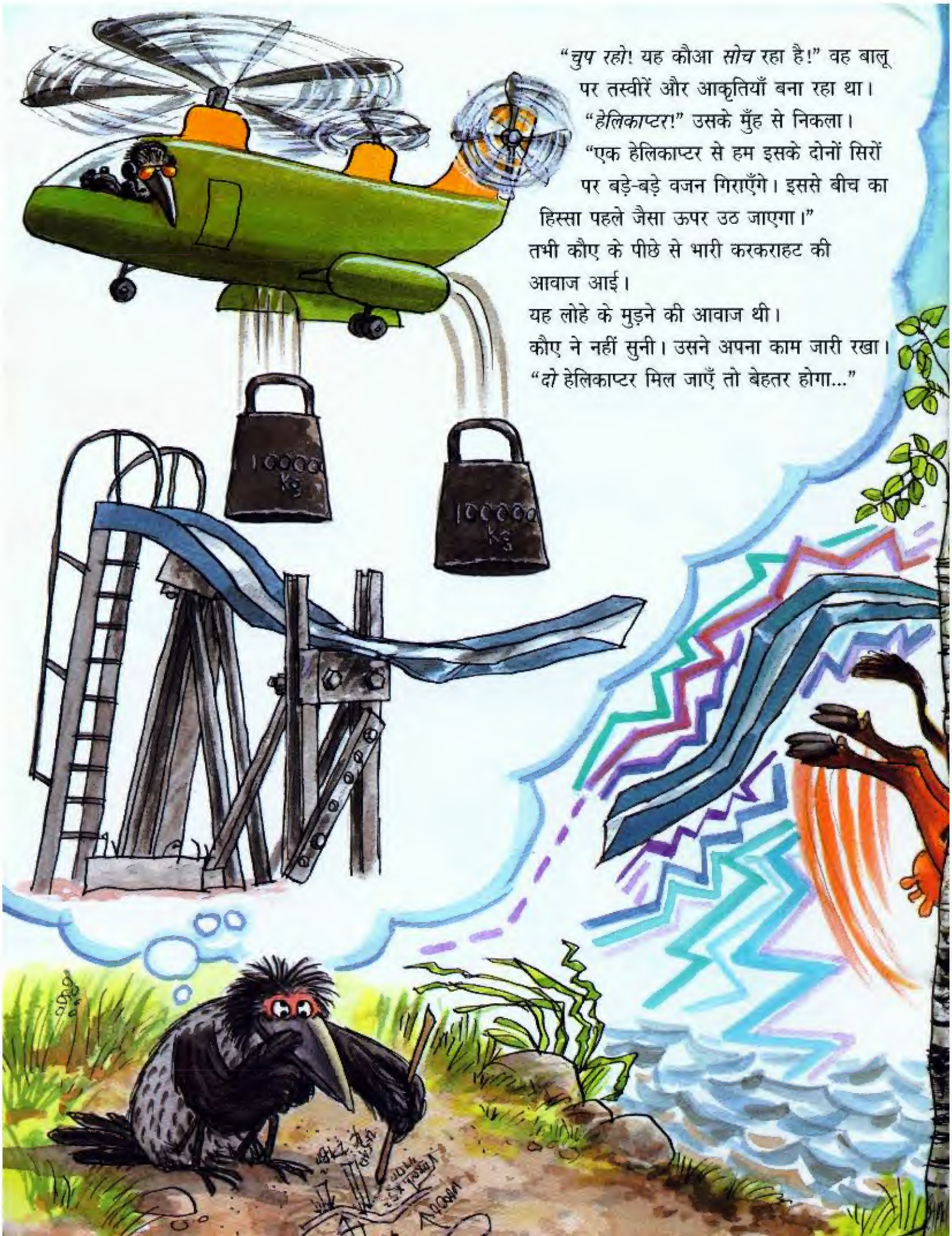

"*चुप रहो*! यह कौआ *सोच* रहा है!" वह बालू पर तस्वीरें और आकृतियाँ बना रहा था।

"*हेलिकाप्टर*!" उसके मुँह से निकला। "एक हेलिकाप्टर से हम इसके दोनों सिरों पर बड़े-बड़े वजन गिराएँगे। इससे बीच का हिस्सा पहले जैसा ऊपर उठ जाएगा।"

तभी कौए के पीछे से भारी करकराहट की आवाज आई।

यह लोहे के मुड़ने की आवाज थी।

कौए ने नहीं सुनी। उसने अपना काम जारी रखा।

"*दो* हेलिकाप्टर मिल जाएँ तो बेहतर होगा..."

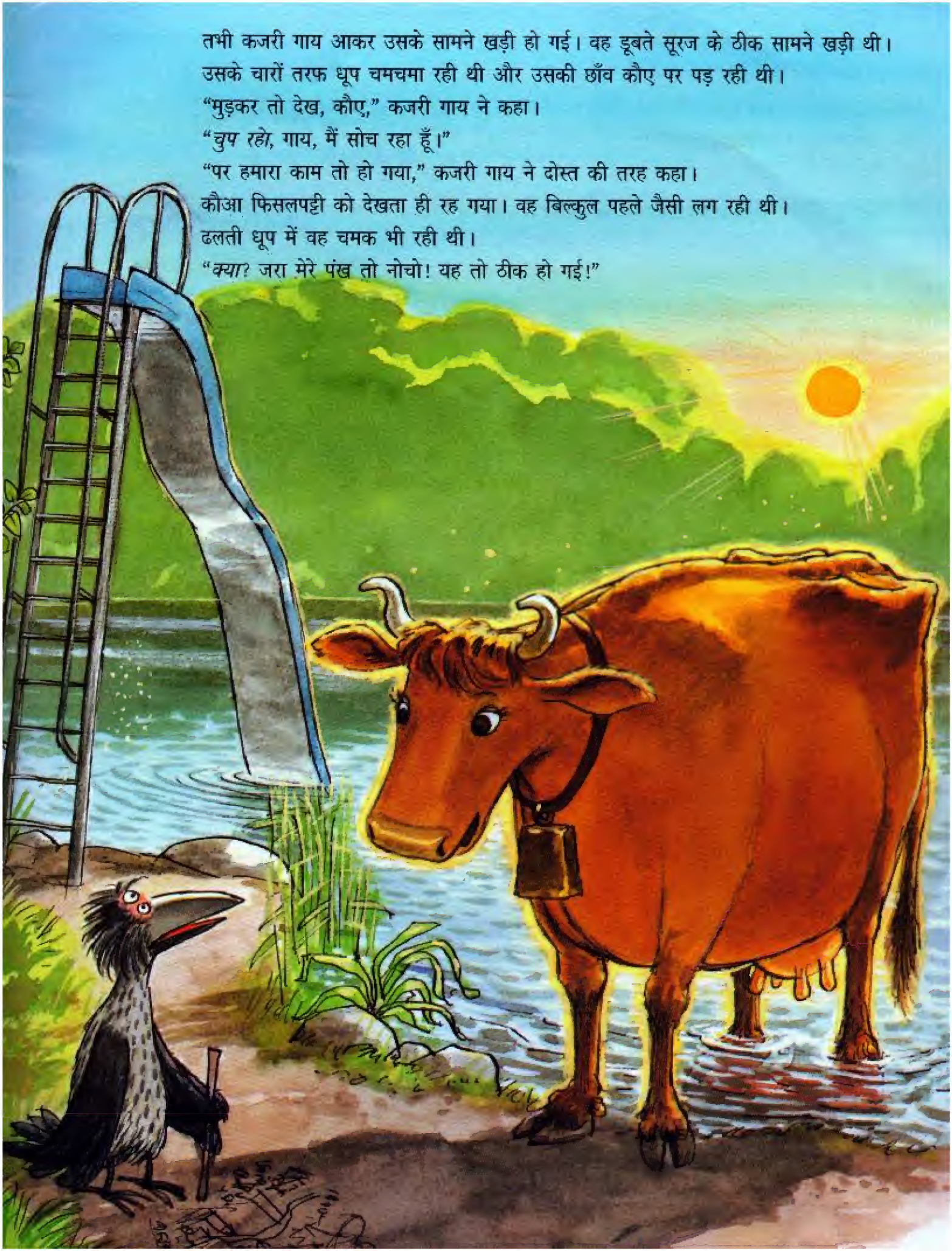

तभी कजरी गाय आकर उसके सामने खड़ी हो गई। वह डूबते सूरज के ठीक सामने खड़ी थी। उसके चारों तरफ धूप चमचमा रही थी और उसकी छाँव कौए पर पड़ रही थी।

"मुड़कर तो देख, कौए," कजरी गाय ने कहा।

"*चुप रहो*, गाय, मैं सोच रहा हूँ।"

"पर हमारा काम तो हो गया," कजरी गाय ने दोस्त की तरह कहा।

कौआ फिसलपट्टी को देखता ही रह गया। वह बिल्कुल पहले जैसी लग रही थी। ढलती धूप में वह चमक भी रही थी।

"*क्या?* जरा मेरे पंख तो नोचो! यह तो ठीक हो गई!"

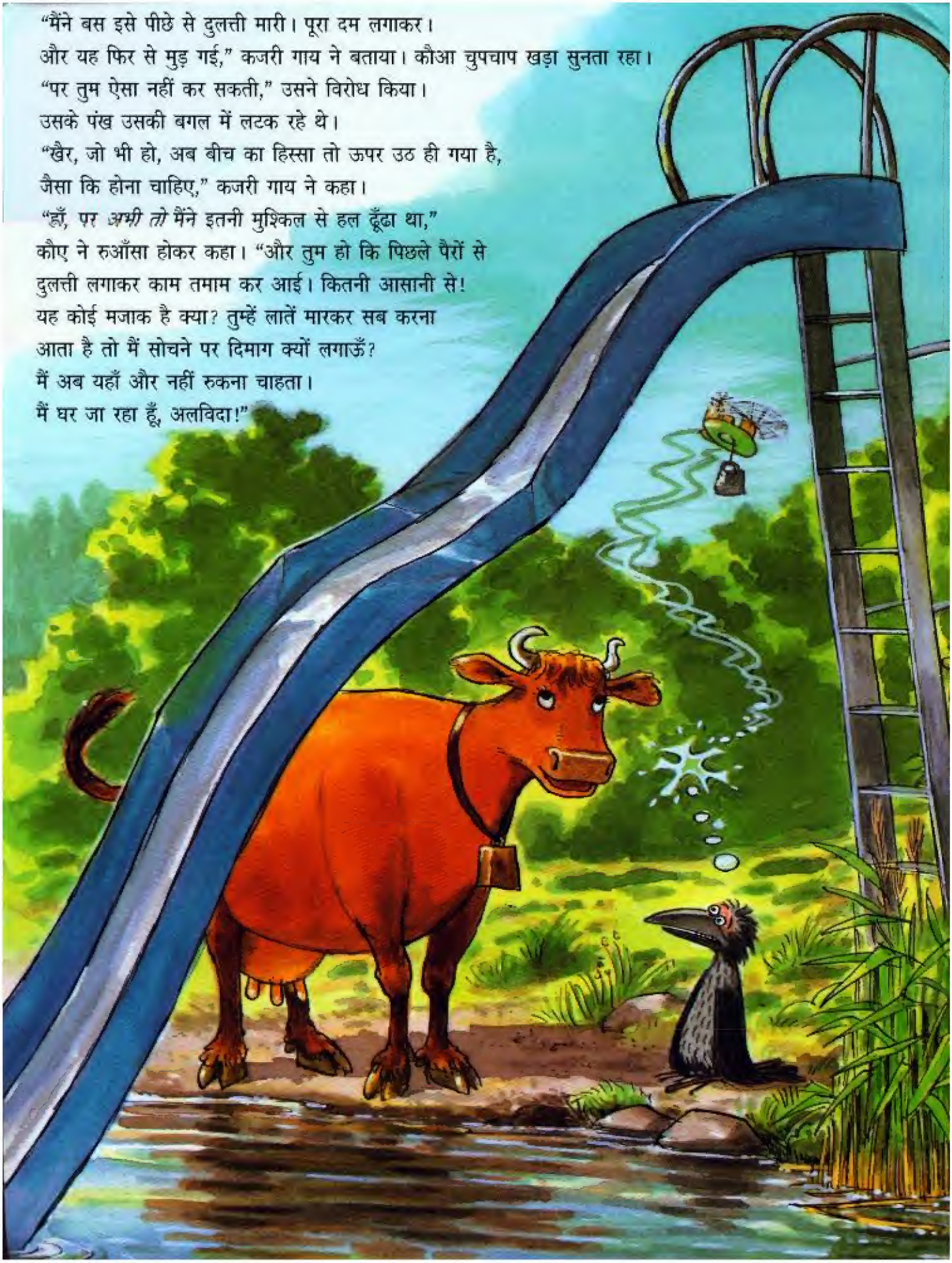

"मैंने बस इसे पीछे से दुलत्ती मारी। पूरा दम लगाकर।
और यह फिर से मुड़ गई," कजरी गाय ने बताया। कौआ चुपचाप खड़ा सुनता रहा।
"पर तुम ऐसा नहीं कर सकती," उसने विरोध किया।
उसके पंख उसकी बगल में लटक रहे थे।
"खैर, जो भी हो, अब बीच का हिस्सा तो ऊपर उठ ही गया है,
जैसा कि होना चाहिए," कजरी गाय ने कहा।
"हाँ, पर *अभी तो* मैंने इतनी मुश्किल से हल ढूँढा था,"
कौए ने रुआँसा होकर कहा। "और तुम हो कि पिछले पैरों से
दुलत्ती लगाकर काम तमाम कर आई। कितनी आसानी से!
यह कोई मजाक है क्या? तुम्हें लातें मारकर सब करना
आता है तो मैं सोचने पर दिमाग क्यों लगाऊँ?
मैं अब यहाँ और नहीं रुकना चाहता।
मैं घर जा रहा हूँ, अलविदा!"

फट्! फट्! फट! कौआ उड़ गया। "अलविदा," कजरी गाय ने कहा।
पर उसने नहीं सुना क्योंकि वह तो कौओं के जंगल में पहुँच चुका था।
कजरी गाय ने आह भरी।
"बच्चे जब फिसलपट्टी पर खेल रहे थे तो कितना मजा आ रहा था।
मैं तो एक बार फिसलकर देखना चाहती थी। यह तो नहीं कि फिसलपट्टी ही एकदम सीधी हो जाए।
पर अब, *अब* बच्चे जब कल यहाँ आएँगे तो फिर से खेल पाएँगे।"
कजरी गाय तालाब किनारे जा बैठी और उस पार, पेड़ों के पीछे डूबते सूरज को देखती रही।

कजरी गाय जैसी गाय दुनिया में कोई नहीं होगी।
वह वे सब चीजें करना चाहती है जो बच्चों को करते
देखती है। कौआ समझा-समझा कर थक गया है,
पर कजरी गाय पर कोई असर नहीं।

अब देखो ना, कजरी गाय फिसलपट्टी पर जा बैठी है!
नतीजा - धड़ाम्!!

स्वीडन से हम लाए हैं कजरी गाय की मजेदार कहानियाँ।
सात समुन्दर पार से, खास आपके लिए।

50 रुपये
ISBN 978-93-80141-04-6
9 789380 141046